दृष्टि The Vision

पुस्तिका सं. (Sheet No.) ....

माध्यम - हिन्दी

उत्तर पुस्तिका (Answer Sheet)

125-130 V-good.

नाम (Name) जितेन्द्र शुक्ल विषय (Subject) निबन्ध तिथि (Date) 13 सितम्बर 09

पता (Address) .... फोन नंबर (मोबाइल)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ii) खेलों की दुनिया में भारत एक उभरती महाशक्ति के रूप में

महाशक्ति कहलाने का आनन्द ही अनोखा है। और ऐसा होने की प्रक्रिया से गुजरने का अनुभव तो उससे भी अनोखा व आनन्ददायक होता है। वह भी ऐसे क्षेत्र-खेल में जहाँ अभी हाल के दशक तक भारत का कोई भी नाम लेने वाला तक नहीं था। भारत की प्रासंगिकता सिर्फ खेल आयोजनों में भागेदारी तक ही सीमित थी। कुछ छोटे खेल आयोजनों व पारम्परिक खेलों (जैसे - कबड्डी) को छोड़ दें तो भारत सर्वोच्च खेलशक्तियों की श्रृंखला में तो क्या निम्नतम देशों की श्रृंखला से और कभी-कभी तो तालिका से ही बाहर रहता था। कई सारे खेलों में तो या तो उसका प्रतिनीधित्व ही नहीं होता था, या तो उसके खिलाड़ी को उस आयोजन के योग्य ही नहीं समझा जाता था। हम बड़े खेल आयोजनों में अपनी भागेदारी से ही प्रसन्न रहते थे।

परन्तु, जैसा कि कहा जाता है कि हर काली अँधेरी रात के बाद एक उज्ज्वल सुबह होती है और सूर्य अपनी धवल किरणों से उस गहरी, अँधेरी रात के प्रभाव को तीव्रता से धुलता है, उसी प्रकार भारत भी एक पिछड़े खेल क्षेत्र वाले देश की अपनी कालिमा को धुलते हुए एक खेल रूपी महाशक्ति जैसे सूर्य के रूप में अपनी लालिमा सारे विश्व में प्रकीर्णित कर रहा है और - सायना नेहवाल, पंकज आडवाणी, अभिनव बिन्द्रा, एम॰ मेरीकॉम, विश्वनाथन आनन्द, कोनेरु हम्पी, धोनी, सचिन तेन्दुलकर आदि कुछ नाम

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस उभरते खेल महाशक्ति रूपी सूर्य की ज्वाजल्यमान किरणें हैं, जो इसकी रश्मि से सारे विश्व को आलोकित करने में प्रयासरत हैं।

ऐसा नहीं है कि भारत सदैव खेलों में पिछड़ा ही रहा है। भारत का इतिहास खेलों के मामले में स्वतंत्रता के पूर्व तथा स्वतंत्रता के कुछ बाद के समय तक औसत प्रदर्शन वाला रहा है। कुछ खेलों के मामले में तो भारत इस समय तक आज से भी अच्छे प्रदर्शन में रहा है और हॉकी का तो विश्वशक्ति ही माना जाता था। फुटबॉल के सन्दर्भ में ऐसा ही देखने को मिलता है, जहाँ भारत 1952 के एशियाई खेलों के फाइनल तक भी पहुँचा था। परन्तु स्वतंत्रता के पश्चात औपनिवेशिक शासन के शोषित प्रभाव व एक पिछड़े देश के रूप में भारत का ध्यान सिर्फ भारत के आर्थिक-सामाजिक विकास पर गया। अतः नीतियों व कार्यक्रमों में खेलों का महत्व घटता गया और देश में खेल गतिविधियाँ ठप्प सी होती चली गईं। उन्हीं खेलों में हमारा अस्तित्व शेष रह गया जो स्वतंत्रता के पहले से ही अच्छी अवस्था में थे और बाद में उन खेलों में भी हम पिछड़ते गए और एक दिन हम कुछ गिने-चुने खेलों में विश्वशक्ति के स्थान को भी खोते चले गए।

और ऐसा हो भी क्यों न? जब एक देश जो व्यापक आर्थिक पिछड़ापन, कई सामाजिक समस्याओं, नए लोकतंत्र की पेचीदगियों तथा अपने विकास-प्रक्रिया के प्रारम्भिक चरण में हो तो न उस सरकार की और न ही वहाँ की जनता का ध्यान ऐसे क्षेत्र- खेल की तरफ जाता है, जिसकी शुरुआत ही इस प्रक्रिया के बाद में होती है।

यही स्थिति भारत में भी दिखती है, जहाँ 1950-80 के दशक में एक हॉकी को छोड़कर सभी खेल गतिविधियों से भारत लगभग गायब रहा है। यही काल भारत में व्यापक सामाजिक-राजनैतिक

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व आर्थिक उठापटक का भी रहा है।

इसके पश्चात् 1980 से 2000 के दो दशकों में जब ये उठापटक शान्त व स्थिर हुई तो भारत को भी अपने इस क्षेत्र के विकास की तरफ ध्यानाकर्षण हुआ। ये खेलों के विकास का भारत में प्रारम्भिक चरण माना जा सकता है। एक और प्रमुख घटना ने इस चरण में भारत में खेलों की तरफ लोगों का ध्यान खींचा - वो था भारत का क्रिकेट विश्वकप-1983 का विश्वविजेता बनना तथा 1987 में विश्व सीरीज में जीत हासिल करना। इन दो घटनाओं ने जहाँ देश में क्रिकेट को पागलपन की हद तक स्थापित करने में महती भूमिका निभाई, वहीं भारत को एक महाशक्ति के रूप में उभरने के लिए विश्व पटल पर एक सुदृढ़ प्लेटफॉर्म भी दिखाया। इस घटना ने सरकार का भी ध्यान खेलों की तरफ आकर्षित करने में अहम योगदान दिया। यद्यपि कि यही दौर था - जब भारत ने हॉकी में अपनी 'विश्वशक्ति' के ओहदे को तार-तार भी किया, परन्तु इसके लिए कुछ राजनैतिक तो कुछ खेल से जुड़े संस्थागत कारकों के योगदान को कारण माना जा सकता है। जैसे-

1. हॉकी खेल के लिए एस्ट्रो टर्फ के मैदानों का प्रयोग।
2. हॉकी से जुड़ी संस्थाओं में तथा कोच को लेकर व्यापक उठा पटक।

लेकिन इन सारे खट्टे - मीठे अनुभवों के साथ (1996 के अटलांटा ओलम्पिक में लिएण्डर पेस का कॉस्य पदक भी उल्लेखनीय) जब भारत ने खेलों के विकास के अपने तीसरे चरण अर्थात् 21वीं सदी में कदम रखा तो सभी स्थितियाँ एकदम उलट चुकी थी। भारत आर्थिक व सामाजिक दृष्टिकोण से भी विश्व में स्थापित हो रहा था, उसके विकास की गति उसे विश्व की बड़ी

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शक्तियों के कतार में शामिल कराने की होड़ में थी। इन सब सुखद घटनाओं के कारण भारत का ध्यान खेलों के विकास की तरफ भी गया। यहाँ एक बात की तरफ और भी ध्यान दिलाना आवश्यक है कि - अब अर्थात् 21वीं सदी का भारत वो भारत नहीं था जहाँ लोगों में मान्यता थी कि - 'खेलोगे, कूदोगे तो होगे खराब और पढ़ोगे - लिखोगे तो होगे नवाब।' 21वीं सदी का भारत तो इतना आत्मनिर्भर व विकसित हो चुका था कि ये धारणा ही लोगों ने उलट दी। ~~और कहा कि~~ - अतः यह कहा जा सकता है कि लोगों की आर्थिक आत्मनिर्भरता, सरकार की जागरुकता व खेलों के विकास की तरफ दिए गए ध्यान से 2000 के बाद भारत खेलों के मामले में हर खेल विभाग में अपनी पहचान स्थापित करने और अपना लोहा मनवाने में प्रयासरत है और इससे कुछ हद तक सफलता भी मिली है। इस सफलता के कुछ उदा० दृष्टव्य हैं :→

अभी हाल में सितम्बर 2009 में पंकज आडवाणी का विश्व बिलियर्ड्स का पेशेवर खिताब जीतना, मैरीकॉम का 4 बार लगातार विश्व महिला मुक्केबाजी का खिताब जीतना, अभिनव बिन्द्रा का पहली बार ~~में~~ व्यक्तिगत स्पर्धा में ओलम्पीक में ~~के लिए~~ स्वर्ण पदक जीतना (बीजिंग ओलम्पीक - '2008), राज्यवर्द्धन राठौर का 2004 एथेंस ओलम्पीक में शूटिंग में रजत पदक, बीजिंग ओलम्पीक में विजेन्दर कुमार का मुक्केबाजी व सुशील कुमार का कुश्ती में काँस्य पदक जीतना (भारत पहली बार ओलम्पीक स्पर्धा में 3 पदक पाया) आदि कुछ ऐसी ही उपलब्धियाँ हैं।

सूचना व संचार क्रान्ती ने भी भारत में इस दशक में खेलों को बढ़ावा देने में विशेष भूमिका निभाई है। इसने विश्व के मध्य की दूरियों को मिटाते हुए सभी खेलों को घर - 2 पहुँचाया है। जिसके कारण भारतीय रूढ़िवादी मानसिकता में सुधार हुआ और आज

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अभिभावक अपने बच्चों को न सिर्फ खेलों की तरफ भेज रहे हैं, अपितु उनको पूरा प्रोत्साहन व समर्थन भी दे रहे हैं। नहीं तो इसके पहले के दशक तक बच्चों के चाहते हुए भी उनके खेलों के ऊपर सबसे पहले प्रतिबंध उनके अभिभावक ही लगाते थे।

सूचना-तकनीक क्रान्ति भी एक और तरीके से खेलों को बढ़ाने में अपना अप्रत्यक्ष योगदान दे रही है। आज खेलों में इसके कारण इतना पैसा आया है कि अब कोई भी व्यक्ति कुछ सालों तक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलकर पूरा जीवन आर्थिक दृष्टि से सुरक्षित कर सकता है।

मीडिया के बढ़ते प्रभाव का नतीजा है कि आज खेलों में पुरुषों की भागेदारी के अलावा महिलाओं की भी भागेदारी भारत में बढ़ी है और न सिर्फ बढ़ी है अपितु वो पुरुषों से कन्धे-से कन्धा मिलाकर भारत को खेल महाशक्ति के रूप में उभारने में लगी हैं। इस दृष्टि से देखें तो महिलाएँ कहीं-2 पुरुषों से आगे भी दिख रही हैं। उदा० – विश्व बैडमिंटन में सायना नेहवाल आज विश्व में 6ठें पायदान पर हैं जबकि कोई भी पुरुष बैडमिण्टन खिलाड़ी वहाँ तक कभी भी नहीं पहुँच पाया है। सायना नेहवाल के अतिरिक्त, मैरीकॉम ने मुक्केबाजी में, कोनेरू हम्पी ने शतरंज में तथा भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने अपनी साख का लोहा विश्व को मनवाया है। महिला क्रिकेट टीम की मीडियम तेज गति की गेंदबाज- झूलन गोस्वामी को तो 2008 में महिला आई सी सी प्लेयर ऑफ द ईयर का खिताब भी मिला था।

इन सब उपलब्धियों को प्राप्त करने में सरकार ने भी अपनी व्यापक भूमिका निभाई है। जिसको हम निम्न रूपों में देख सकते हैं–

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishtiacademy@gmail.com

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

① खेलों के अवसंरचना संबंधी विकास पर सरकार अब व्यापक ध्यान देने लगी है। सभी जिले में लगभग अब खेलों के विकास के लिए एक संस्थान व मैदान की सुविधा उपलब्ध कराने का प्रयास किया है। गाँवों में भी खेलों के विकास के लिए पंचायतों को सुविधा प्रदान करने का प्रस्ताव है।

② सरकार बड़े स्तर पर खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए - रियायतें व आर्थिक सहायता भी प्रदान करती है।

③ राज्य स्तरीय व राष्ट्रीय स्तरीय खिलाड़ियों को रोजगार ~~सुवि~~ सुविधा भी प्रदान करती है।

④ बड़े आयोजनों में पदक जीतने व श्रृंखला जीतने पर प्रोत्साहन राशि व बड़े पुरस्कारों की घोषणा करती है व उन्हें प्रदान भी करती है।

⑤ इसके अतिरिक्त सरकार अब बड़े खेल आयोजनों को भी देश में आयोजित कराने की तरफ ध्यान दे रही है। जिससे कि लोगों का खेलों की तरफ ध्यान जाए और हमारे देश के लोग भी खेलों का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकें। आर्थिक स्थिति ने हमें इस व्यवस्था के योग्य बनाने में मदद की है। जैसे

— विश्व बैडमिंटन चैम्पियनशिप 2009
— राष्ट्रमण्डल खेल 2010
— विश्व कप हॉकी - 2010
— विश्व युवा वॉलीबॉल विश्वकप - 2009
— युवा राष्ट्रमण्डल खेल - 2009 आदि।

इसके अतिरिक्त भारत ओलम्पिक की मेजबानी के लिए भी प्रयासरत है।

इन सब के कारण भारत आज न सिर्फ क्रिकेट के मामले में अपितु टेनिस, गोल्फ, शतरंज, बिलियर्ड्स, स्नूकर, मुक्केबाजी, शूटिंग, बैडमिंटन आदि खेलों में अपनी पहचान व शक्ति स्थापित करने

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में सफल रहा है।

परन्तु इन्हीं सब खेलों के अतिरिक्त इसी क्षेत्र में कुछ खेल ऐसे भी हैं, जहाँ हमने अपनी विश्व हैसियत गंवायी है और साथ ही कुछ खेल ऐसे भी हैं, जहाँ हमारा अभी कोई अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर औचित्य ही नहीं।

हॉकी व फुटबाल कुछ ऐसे ही खेल हैं जो पूरे विश्व में खेले जाते हैं और इनमें हमारा प्रदर्शन पिछले 20 वर्षों में लगातार खराब होते-2 निम्नतम स्तर पर पहुँच गया है। हॉकी में तो हम विश्वशक्ति से निचले पायदान पर आ गए हैं और फुटबॉल में हमारा विश्व स्तर पर कोई नाम ही नहीं बचा है। अतः इन खेलों में सुधार के बिना हम खेलों की विश्वशक्ति कैसे कहलाएँगे, वो भी तब जब हमारा राष्ट्रीय खेल ही हॉकी है।

खेलों का एक और ऐसा ही क्षेत्र है - जहाँ हमारा कोई नामलेवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अभी तक उभर नहीं पाया है - और वह है - एथलेटिक्स व जिमनास्टिक एथलेटिक्स सभी प्रकार के वैश्विक वृहद आयोजनों की पहचान होते हैं और इस क्षेत्र में भारत की अभी तक कोई पहचान नहीं मिली है। सभी बड़े खेल आयोजनों के अधिकांश पदक उसी आयोजन से जुड़े होते हैं। और इनमें भारत का योगदान न होना उसे कभी भी खेलों की विश्वशक्ति नहीं बनने देगा। आखिर ऐसी क्या बात है कि एक छोटा सा देश जमैका, एक पिछड़ा देश - केन्याभी हमसे वैश्विक आयोजनों में ऊपर रहते हैं और पदक तालिका में अच्छा स्थान प्राप्त करते हैं और उन्हीं खेलों में हम देश से एक अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी नहीं पैदा कर पाते। इस संदर्भ में स्थिति दयनीय व अत्यन्त शोचनीय है और यह संदर्भ हमारे खेल के महाशक्ति

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishtiacademy@gmail.com

दृष्टि
The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के रूप में उभरने के सवाल पर प्रश्नचिह्न खड़ा कर सकती है। अतः यह एक ऐसा विभाग है जहाँ सरकार को ध्यान देना आवश्यक है और अगर सरकार इसमें सफल रहती है तो, भारत को आने वाले वर्षों में खेल महाशक्ति बनने से कोई नहीं रोक सकता है।

इन खेलों में भारत की असफलता का कारण इन खेलों का स्थानीय प्रकृति से जुड़ा होना है। यहाँ बड़े या राष्ट्रीय स्तर पर कार्रवाही से सफलता नहीं मिल सकती। इस संदर्भ में विकास के लिए आवश्यक है कि सरकार निचले स्तर पर उतरकर और प्रारम्भिक स्तर अर्थात् बच्चों के प्राथमिक शिक्षा के स्तर से ही प्रतिभाओं को तलाश कर उन्हें तराशे और उन्हें व्यापक सुविधाएँ प्रदान कर उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय रूप पर प्रस्तुत करे और उनके द्वारा अपने रुतबे को भी विश्व स्तर पर स्थापित करे। ऐसा ही कुछ प्रयास जिम्नास्टिक के क्षेत्र में भी आवश्यक है, जहाँ अभी विश्व स्तर पर भारत का कोई भी प्रतिनिधित्व नहीं दिखता।

इन कुछ क्षेत्रों को अगर विकसित कर लिया जाए और बाकी के खेलों में भारत के प्रदर्शन को ध्यान में रखें तो हम यह पाते हैं कि भारत के लिए खेल की महाशक्ति के रूप में उभरना ज्यादा कठिन नहीं है। हाँ उस सुखद अनुभूति से बचने का भी प्रयास करना चाहिए, जो हमें हाल ही में कुछ खेलों में बड़ी सफलताओं से प्राप्त हुई है। क्योंकि कुछ सफलताओं से मिली खुशी व खुशफहमी हमारे बढ़ते कदमों के लिए आलस्य रूपी अवरोधक का काम करती है और खेल ऐसा ही

दृष्टि The Vision
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

क्षेत्र है जहाँ सतत व लगातार प्रयास सफलता के लिए आवश्यक है और सफलता प्राप्त करने के पश्चात उस सफलता को बनाए रखने की प्रवृत्ति व और भी लगातार मेहनत सदैव आवश्यक होती है। यहाँ खरगोश की तरह तेजी तो प्रारम्भ मे आवश्यक है लेकिन उसके बाद कछुए जैसी निरन्तरता व दृढ़ निश्चय (लक्ष्य के प्रति लगातार) अति आवश्यक है, तभी भारत विश्व खेलो की महाशक्ति के रूप में अपना स्थान स्थापित कर पाएगा।

125-120

V. Gupta

Jitendra Shukla

पता : 641, प्रथम तल, डॉ० मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-27604128, 0-9313988616, 0-9810316396 ई-मेल (E-mail) : drishtiacademy@gmail.com